SOCIAL STRATIFICATION

प्रकार्यवादी सिद्धान्त (Part - I), Paper - I

सामाजिक स्तरीकरण का प्रकार्यवादी सिद्धान्त 1945 में Kingsley Davis एवं Wilbert Moore के द्वारा प्रस्तुत किया गया। बाद में Parsons ने भी इस सिद्धान्त का समर्थन किया। स्तरीकरण का प्रकार्यवादी सिद्धान्त तीन मौलिक मान्यताओं पर आधारित है -

(i) यह सिद्धान्त मानता है कि कोई भी समाज आज तक स्तरविहीन नहीं रहा है।

(ii) प्रत्येक समाज में स्तरीकरण की प्रकार्यात्मक आवश्यकताएँ होती हैं और

(iii) प्रत्येक समाज में जो पद ऊँचे या प्रतिष्ठा वाले होते हैं उनमें सभी जगह लगभग समान प्रतिष्ठा पायी जाती है।

Davis एवं Moore के अनुसार सामाजिक स्तरीकरण में मूल आधार पदों का होता है और साथ ही यह कि ये विभिन्न पद किस प्रकार भरे जाते हैं। प्रत्येक समाज व्यवस्था में सभी कार्यों को निपटाने के लिए एक ही प्रकार के व्यक्ति काम में नहीं लाये जाते हैं, बल्कि अलग-अलग महत्त्व के कार्य के लिए अलग-अलग योग्यता वाले व्यक्तियों की जरूरत होती है। स्पष्टतः कोई भी समाज व्यवस्था अपने को बनाये रखने के लिए कार्यों का बँटवारा करती है और इसी बँटवारे से समाज में असमान पदों का निर्माण होता है। समाज के ये सभी पद एक समान नहीं होते हैं बल्कि कुछ पद अन्य पदों के बनिस्पत ज्यादा प्रतिष्ठित होते हैं। साथ ही कुछ पदों के लिए विशेष प्रतिभा की जरूरत होती है और साथ ही कुछ पद समाज में प्रकार्यात्मक रूप से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होते हैं बनिस्पत अन्य पदों के। इस तरह Davis एवं Moore के अनुसार किसी भी समाज में पदों का एक संस्तरण होता है लेकिन कौन पद ऊँचा है या नीचा यह इस बात पर निर्भर नहीं करता है कि समाज में उसका प्रकार्यात्मक महत्त्व कितना है, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उस पद पर भर्ती कितनी आसानी या कठिनाई से की जाती है। यदि किसी पद पर भर्ती आसानी से हो जाती है तो यह पद समाज में निम्न माना जाता है लेकिन कठिनाई से भरे जानेवाले पद जहाँ योग्यता की विरलता होती है वैसे पदों को ऊँचा माना जाता है।

इन पदों पर भर्ती के लिए प्रत्येक

समाज किसी न किसी प्रतियोगिता और पुरस्कार व्यवस्था को निर्धारित करती है। ये प्रतियोगिता और पुरस्कार तथा इनका वितरण समाज व्यवस्था के अंग बन जाते हैं जो स्वतः सामाजिक स्तरीकरण को जन्म देते हैं। प्रकार्यवादियों के अनुसार समाज में जो पद जितना ऊँचा है उसके लिये प्रतियोगिता उतनी कठिन पर पुरस्कार उतना ही ज्यादा होता है साथ ही जो पद जितना निम्न होता है उसे भरने में उतनी ही आसानी होती है और उसके साथ पुरस्कार भी सीमित होते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक असमानता अप्रत्यक्ष रूप से विकसित की गयी एक ऐसी व्यवस्था है जिसके द्वारा यह तय किया जाता है कि सबसे महत्वपूर्ण पद योग्य व्यक्ति को दिये जायें।

सामाजिक असमानता का स्वरूप सभी समाजों में एक जैसा नहीं है। इसका एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि कुछ कार्य एक समाज के लिये ज्यादा महत्वपूर्ण होता है तो कुछ कार्य दूसरे समाज के लिये ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं। दूसरा यह कि कुछ कार्यों के लिये ज्यादा प्रशिक्षण एवं योग्यता की जरूरत होती है जबकि कुछ कार्यों के लिये विशेष प्रशिक्षण एवं योग्यता का कोई महत्व नहीं होता है। पहले का संबंध जहाँ समाज की आवश्यकताओं से है वहीं दूसरे का संबंध प्रतिभा के अभाव से। अतः एक समाज में एक कार्य महत्वपूर्ण माना जाता है दूसरा कार्य दूसरे समाज में और साथ ही साथ एक प्रकार के कुशल व्यक्ति एक समाज में ज्यादा होते हैं तो दूसरे समाज में दूसरे प्रकार के कुशल व्यक्ति। स्पष्टतः सामाजिक स्तरीकरण का स्वरूप भिन्न-भिन्न समाजों में या एक ही समाज के भिन्न-भिन्न कालों में हमें अलग अलग दिखाई देता है।

Davis एवं Moore के इस सिद्धान्त का समर्थन Talcott Parsons ने भी किया है। Parsons का मत है कि सामाजिक स्तरीकरण का कुछ निश्चित महत्व होता है जिसकी विवेचना केवल वैयक्तिक कर्ता के दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज व्यवस्था के संदर्भ में किया जा सकता है। इसके अनुसार सामाजिक स्तरीकरण के तीन प्रमुख आधार हैं...

Conto